

आरती श्री गायत्री जी की ।
आरती श्री गायत्री जी की,
ज्ज्ञान दीप और श्श्रद्धा की बाती
सो भक्त्ता ही पूर्र्ता करै जहं घी की ।
आरती श्री गायत्री जी की ।
मानस की शुच्ची थाल के ऊपर
देवी की ज्योत्ता ज्जिगै, जहं नक्की।
आरती श्री गायत्री जी की ।
शुद्ध मनोरथ के जहां घण्टा,
बाजै करै पूरी आसहु ही की ।
आरती श्री गायत्री जी की ।
जाके समक्ष हमें तह्हि लोक कै
गद्धी मल्लै तबहूं लगे फीकी।
आरती श्री गायत्री जी की ।
संकट आवै न पास कबौ तन्हिहे
सम्पदा औ सुख की बनै लक्की।
आरती श्री गायत्री जी की ।
आरती प्रेम सो नेम सों करि
ध्यावहा भूर्ता ब्रम्हा लली की ।
आरती श्री गायत्री जी की ।